وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ

और हराम की गईं औरतों में से शौहर वाली औरतें मगर तुम्हारी बांदियाँ।

كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ

ये तुम पर अल्लाह की तरफ से लिखा हुवा (फर्ज़ किया हुवा) है। और तुम्हारे लिए उस के अलावा (औरतें) हलाल हैं

اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ

इस तरह के तलब करो अपने माल के ज़रिए इस हाल में के तुम निकाह करने वाले हो, ज़िना करने वाले न हो।

فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ

फिर उन में से जिन से तुम ने (सोहबत से) फाइदा उठाया तो उन को उन का महर दे दो जो

فَرِيْضَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ

मुक़र्रर किया था। और तुम पर कोई गुनाह नहीं है उस में जिस पर आपस में तुम राज़ी हो जाओ

مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٢٤﴾

मुकर्रर कर लेने के बाद। यक़ीनन अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं।

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ

और तुम में से जो ताक़त न रखे इस की के वो पाकदामन ईमान वाली औरतों से

الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ

निकाह करे, तो फिर तुम्हारी लौंडियाँ (सही), तुम्हारी मोमिन बांदियों

الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ بَعْضُكُمْ

में से। और अल्लाह खूब जानता है तुम्हारे ईमान को। तुम में से एक

مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ

दूसरे से हो। तो उन से निकाह करो उन के मालिकों की इजाज़त से और उन को

اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ

उन का महर दो उर्फ के मुताबिक़, इस हाल में के वो पाकदामनी इखतियार करने वाली हों और ज़िना करने वाली न हों

وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ

और चुपके चुपके दोस्त बनाने वाली न हों। फिर जब वो बांदियाँ, शादी शुदा होने के बाद, फिर अगर वो

بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ

ज़िना का इर्तिकाब करें तो उन बांदियों पर उस सज़ा का आधा हिस्सा है जो आज़ाद पाकदामन औरतों

الْعَذَابِ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ؕ

पर है। ये उस के लिए है जो तुम में से ज़िना की मशक़्क़त में पड़ने से डरता हो।

وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٥﴾ ع يُرِيْدُ

और ये के सब्र करो ये तुम्हारे लिए बेहतर है। और अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। अल्लाह चाहते

اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَ يَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ

हैं के तुम्हारे लिए साफ साफ बयान करें और तुम्हें हिदायत दें उन लोगों के रास्ते की

مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦﴾ وَاللّٰهُ

जो तुम से पेहले थे और तुम्हारी तौबा क़बूल करें। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और अल्लाह

يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَ يُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ

चाहते हैं के तुम्हारी तौबा क़बूल करें। और वो लोग जो ख्वाहिशात का इत्तिबा

الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿٢٧﴾ يُرِيْدُ اللّٰهُ

करते हैं वो ये चाहते हैं के तुम बहोत ज़्यादा माइल हो जाओ। अल्लाह ये चाहते हैं

اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَ خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿٢٨﴾

के तुम से तखफीफ करें। और इन्सान कमज़ोर पैदा किया गया है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ

ऐ ईमान वालो! अपने माल आपस में बातिल तरीक़े से

بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۗ

मत खाओ, मगर ये के वो तुम्हारी आपस की रज़ामन्दी से तिजारत हो।

وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٢٩﴾

और अपने आप को क़त्ल मत करो। यक़ीनन अल्लाह तुम पर मेहरबान है।

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّ ظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ

और जो उस को करेगा ज़्यादती और ज़ुल्म से तो हम उसे आग में दाखिल

نَارًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾ اِنْ تَجْتَنِبُوْا

करेंगे। और ये अल्लाह पर आसान है। अगर तुम बचोगे

كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ

उन बड़े गुनाहों से जिन से तुम्हें मना किया जा रहा है तो हम तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देंगे और तुम्हें

مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ

इज़्ज़त की जगह में दाखिल करेंगे। और उस की तमन्ना मत करो जिस के ज़रिए तुम में से एक को

بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ؕ

दूसरे पर अल्लाह ने फज़ीलत दी है। मर्दों के लिए हिस्सा है उल माल में से जो वो कमाएं।

وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ وَسْـَٔلُوا اللّٰهَ

और औरतों के लिए हिस्सा है उस माल में से जो वो कमाएं। और अल्लाह से उस के

مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمًا ﴿٣٢﴾

फज़्ल का सवाल करो। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं।

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ؕ

और हर एक के लिए हम ने वारिस मुक़र्रर कर दिए हैं उस माल के जो वालिदैन और रिश्तेदारों ने छोड़ा।

وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ

और उन्हों ने छोड़ा जिन से तुम ने अक़्द (अहद) किया है, तो तुम उन को उन का हिस्सा दो।

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِيْدًا ﴿٣٣﴾ ع ٥ اَلرِّجَالُ

यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को देख रहे हैं। मर्द

قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ

निगरां हैं औरतों पर इस वजह से के अल्लाह ने उन में से बाज़ को बाज़ पर

عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ

फज़ीलत दी है और इस वजह से के वो अपने अमवाल में से खर्च करते हैं। तो नेक औरतें वो हैं जो

قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِيْ

खुशूअ करने वाली हों और ग़ैबत में हिफाज़त करने वाली हों उस में जिस पर अल्लाह ने मुहाफिज़ बनाया है। और जिन

تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ

औरतों की नाफरमानी का तुम्हें अन्देशा हो, तो उन को नसीहत करो और उन को अलग छोड़ दो

فِی الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا

बिस्तरों में और तुम उन को मारो (अय्यूब अलैहिस्सलाम की तरह)। फिर अगर वो तुम्हारा केहना मान लें तो तुम उन के

عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

खिलाफ हुज्जत तलाश मत किया करो। यक़ीनन अल्लाह बरतर है, बड़ा है।

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا

और अगर तुम्हें अन्देशा हो आपस में उन दोनों के झगड़े का तो एक हकम भेजो शौहर के

مِّنْ اَهْلِهٖ وَ حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا

कुम्बे की तरफ से और एक हकम भेजो बीवी के कुम्बे की तरफ से। अगर वो दोनों हकम सुल्ह कराने का इरादा करेंगे

يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ۝۳۵

तो अल्लाह उन के दरमियान मुवाफ़क़त डाल देंगे। यक़ीनन अल्लाह इल्म वाले, बाखबर हैं।

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّ بِالْوَالِدَيْنِ

और अल्लाह की इबादत करो और उस के साथ किसी चीज़ को शरीक मत ठेहराओ और वालिदैन के साथ

اِحْسَانًا وَّبِذِی الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

हुस्ने सुलूक करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों के साथ

وَالْجَارِ ذِی الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ

और रिश्तेदार पड़ोसी और अजनबी पड़ोसी के साथ और पेहलू वाले साथी

بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ

के साथ और रास्ता चलते मुसाफिर के साथ और अपने गुलाम बांदियों के साथ।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۝۳۶ ۙ

यक़ीनन अल्लाह उस शख्स से महब्बत नहीं करते जो अकड़ने वाला, फख्र करने वाला है।

اِۨلَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَ يَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ

वो लोग जो बुख्ल करते हैं और इन्सानों को बुख्ल का हुक्म देते हैं

وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاَعْتَدْنَا

और छुपाते हैं उस को जो अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन को दिया है। और हम ने काफिरों के लिए

لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝۳۷ ۚ وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ

रूस्वा करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है। और जो अपने माल

اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

खर्च करते हैं लोगों के दिखावे के लिए और अल्लाह पर ईमान नहीं रखते

وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا

और आखिरी दिन पर ईमान नहीं रखते। और शैतान जिस का साथी बन गया

فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿٣٨﴾ وَمَا ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ

तो वो बुरा साथी है। और उन पर क्या बोझ होता अगर वो अल्लाह पर ईमान लाते

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ۭ وَكَانَ

और आखिरी दिन पर ईमान लाते और खर्च करते उस माल में से जो अल्लाह ने उन को रोज़ी के तौर पर दिया। और

اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿٣٩﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ

अल्लाह उन को खूब जानने वाले हैं। यक़ीनन अल्लाह ज़र्रा भर ज़ुल्म नहीं करते।

وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ

और अगर कोई एक नेकी होगी तो अल्लाह उसे कई गुना करेंगे और अपनी तरफ से भारी अज्र

وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم

اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾ فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۢ بِشَهِيْدٍ

देंगे। फिर क्या हाल होगा जब के हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएंगे

وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَاۗءِ شَهِيْدًا ﴿٤١﴾ يَوْمَىِٕذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ

और हम आप को उन के खिलाफ गवाह बना कर लाएंगे। उस दिन तमन्ना करेंगे वो लोग

كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ ۭ

जो काफिर हैं और जिन्हों ने रसूल की नाफरमानी की के काश के उन पर ज़मीन बराबर कर दी जाती।

ع ٢ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿٤٢﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और अल्लाह से वो किसी बात को छुपा नहीं सकेंगे। ऐ ईमान वालो!

لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا

नमाज़ के क़रीब मत जाओ इस हाल में के तुम नशे में हो यहां तक के तुम समझने लगो

مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ

उस को जो बोल रहे हो और न जनाबत की हालत में (नमाज़ के क़रीब जाओ) मगर रास्ता उबूर करते हुए

حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰي سَفَرٍ اَوْ جَاۗءَ

जब तक के गुस्ल न कर लो। और अगर बीमार हो या सफर पर हो या तुम में से

اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَاۗىِٕطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَاۗءَ

कोई क़ज़ाए हाजत से आया हो या तुम ने औरतों से मुक़ारबत की हो

فَلَمْ تَجِدُوْا مَاۗءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا

फिर पानी न पाओ तो पाक मिट्टी पर तयम्मुम कर लो, फिर अपने चेहरों

بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿۴۳﴾
और हाथों पर फेर लो। यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा मुआफ करने वाला, बहोत ज़्यादा बख्शने वाला है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ
क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जिन को किताब का एक हिस्सा दिया गया

يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ﴿۴۴﴾
जो गुमराही को खरीदते हैं और ये चाहते हैं के तुम रास्ते से भटक जाओ।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى
और अल्लाह तुम्हारे दुशमनों को खूब जानते हैं। और अल्लाह काफी कारसाज़ हैं। और अल्लाह

بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ﴿۴۵﴾ مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ
काफी मददगार हैं। उन लोगों में से जो यहूदी हैं वो कलिमात को अपने मआनी

عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَ يَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَ عَصَيْنَا
से फेरते हैं और केहते हैं سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا

وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّ رَاعِنَا لَيًّا ۢ بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا
और اسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ केहते हैं और رَاعِنَا केहते हैं अपनी ज़बानों को मरोड़ते हुए (यानी رَاعِيْنَا) और दीन में

فِى الدِّيْنِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا
तानाज़नी करते हुए। और अगर वो केहते के سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا

وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ
और اسْمَعْ وَانْظُرْنَا तो ये उन के लिए ज़्यादा बेहतर होता और ज़्यादा सीधा रखने वाला होता।

وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۴۶﴾
लेकिन अल्लाह ने उन के कुफ्र की वजह से उन पर लानत फरमाई, फिर वो ईमान नहीं लाएंगे मगर थोड़े।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا
ऐ एहले किताब! ईमान ले आओ उस कुरआन पर जिस को हम ने उतारा,

مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ
जो सच्चा बतलाने वाला है उस तौरात को जो तुम्हारे साथ है इस से पेहले के हम चेहरों को

وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا
मिटा दें, के हम उन चेहरों को उस के पीछे की तरफ कर दें या हम उन पर लानत करें जैसा

لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٤٧﴾
के हम ने सनीचर वालों पर लानत की। और अल्लाह का हुक्म पूरा हो कर रहा।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَ يَغْفِرُ مَا دُوْنَ
यक़ीनन अल्लाह मग़फिरत नहीं करेंगे इस की के उस के साथ शरीक ठेहराया जाए और मग़फिरत कर देंगे उस के

ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤى
अलावा जिस के लिए चाहेंगे। और जो अल्लाह के साथ शरीक ठेहराएगा तो यक़ीनन उस ने भारी गुनाह का

اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿٤٨﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ
इर्तिकाब किया। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जो अपने आप को मुज़क्का (पाक व साफ) बता रहे हैं?

بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٤٩﴾
बल्के अल्लाह मुक़द्दस बनाते हैं जिसे चाहते हैं और तागे के बराबर भी उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा।

اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَكَفٰى
आप देखिए के कैसे वो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं। और यही

٦ ع ٨ بِهٖۤ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٠﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا
सरीह गुनाह के लिए काफी है। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों को जिन को किताब का

مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَ الطَّاغُوْتِ
एक हिस्सा दिया गया वो ईमान रखते हैं बुत पर और शैतान पर

وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰۤؤُلَآءِ اَهْدٰى
और केहते हैं काफिरों के मुतअल्लिक़ के ये ईमान वालों की

مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ﴿٥١﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ
बनिस्बत ज़्यादा सीधी राह पर हैं। ये वो लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत

اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾
फरमाई। और जिस पर अल्लाह लानत फरमाए तो आप उस के लिए कोई मददगार हरगिज़ नहीं पाओगे।

اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ
क्या उन के पास सलतनत का कोई हिस्सा है? फिर तब तो वो लोगों को खजूर की गुठली के सूराख के बराबर

النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿٥٣﴾ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى
भी नहीं देंगे। क्या उन्हें लोगों से हसद है उस पर

مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ

जो अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन को दिया है। यक़ीनन हम ने आले इब्राहीम

اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا

को किताब और हिक्मत दी और हम ने उन्हें मुल्के अज़ीम दिया।

عَظِيْمًا ﴿٥٤﴾ فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَ مِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ

फिर उन में से कुछ लोग उस पर ईमान ले आए और उन में से कुछ उस से दूर

عَنْهُ ۗ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ﴿٥٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

भागे। और जहन्नम जलाने के लिए काफी है। यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने हमारी आयात के साथ

بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ۗ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ

कुफ़्र किया, अनक़रीब हम उन्हें आग में दाखिल करेंगे। जब कभी उन की खालें जल जाएंगी,

بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ۗ

तो हम उस के अलावा और खाल से बदल देंगे ताके वो अज़ाब चखते रहें।

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٥٦﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

यक़ीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। और वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल

الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

करते रहे, अनक़रीब हम उन्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल करेंगे जिन के नीचे से

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ

नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। उन के लिए उन में पाक साफ बीवियाँ

مُّطَهَّرَةٌ ۫ وَّ نُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿٥٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ

होंगी। और हम उन्हें घने साए में दाखिल करेंगे। यक़ीनन अल्लाह

يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ

तुम्हें हुक्म देते हैं इस का के अमानत वालों की अमानतें अदा कर दो।

وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ۗ

और जब तुम लोगों के दरमियान फैसला करो तो इन्साफ के साथ फैसला करो।

اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًا ۢ

यक़ीनन अल्लाह तुम्हें कित्नी अच्छी चीज़ की नसीहत करते हैं। यक़ीनन अल्लाह सुनने वाले,

بَصِيْرًا ۝۵۸ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ
देखने वाले हैं। ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअत करो

وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ
और रसूल की इताअत करो और तुम में से उलुल अम्र की इताअत करो।

فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ
फिर अगर तुम किसी चीज़ में आपस में झगड़ो तो उस को पेश करो अल्लाह और रसूल की तरफ

اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ ذٰلِكَ
अगर ईमान रखते हो अल्लाह पर और आखिरी दिन पर। ये

ع ۸ ۵ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝۵۹ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ
बेहतर है और अच्छे अन्जाम वाला है। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों को

يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ
जो दावा करते हैं के वो ईमान रखते हैं उस कुरआन पर जो आप की तरफ उतारा गया और उन किताबों पर जो आप

مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْٓا اِلَى الطَّاغُوْتِ
से पेहले उतारी गईं, वो ये चाहते हैं के वो फैसला ले जाएं शैतान के पास

وَقَدْ اُمِرُوْٓا اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ ۭ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ
हालांके उन्हें हुक्म दिया गया है के वो उस के साथ कुफ्र करें। और शैतान तो ये चाहता है

اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ۝۶۰ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا
के वो उन्हें दूर की गुमराही में गुमराह कर दे। और जब उन से कहा जाता है के आओ

اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ الْمُنٰفِقِيْنَ
उस की तरफ जो अल्लाह ने उतारा और रसूल की तरफ आओ, तो आप मुनाफिक़ीन को देखोगे

يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ۝۶۱ ۚ فَكَيْفَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ
के वो आप से ऐराज़ करते हैं। फिर क्या हाल होगा जब उन को मुसीबत

مُّصِيْبَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ جَاۗءُوْكَ
पहोंचेगी उन आमाल की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे, फिर वो आप के पास आते हैं

يَحْلِفُوْنَ ۖ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّآ اِحْسَانًا
अल्लाह की क़स्में खाते हुए के हम ने तो इरादा नहीं किया मगर नेकी का

وَّتَوْفِيْقًا ﴿٦٢﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَعْلَمُ اللّٰهُ مَا

और आपस में मुवाफक़त का। यही लोग हैं के अल्लाह खूब जानते हैं उसे जो

فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَّهُمْ

उन के दिलों में है। इस लिए आप उन की तरफ से ऐराज़ कीजिए और उन्हें नसीहत कीजिए और उन के

فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَوْلًاۢ بَلِيْغًا ﴿٦٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ

सामने उन के बारे में क़ौले बलीग़ (दिल में उतरने वाली बात) कहिए। और हम ने कोई रसूल नहीं भेजे

اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

मगर इस लिए ताके उन की इताअत की जाए अल्लाह के हुक्म से। और जब उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म कर लिया था

جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ

तो अगर वो आप के पास आते, फिर अल्लाह से इस्तिग़फार करते ओर उन के लिए रसूल भी इस्तिग़फार करते

لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٤﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

तो अलबत्ता वो अल्लाह को बहोत ज़्यादा तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम करने वाला पाते। फिर आप के रब की क़सम! बिल्कुल ये लोग

حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا

मोमिन नहीं हो सकते जब तक के वो आप को हकम न बनाएं उन के आपस के झगड़ों में, फिर वो अपने दिलों

فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٦٥﴾

में कोई तंगी भी न पाएं आप के फैसले से और दिल से मान लें।

وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا

और अगर हम उन पर ये फर्ज़ कर देते के अपने आप को हलाक कर दो या अपने

مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ

घरों से निकल जाओ तो उस को न करते मगर उन में से थोड़े लोग। और अगर वो

فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ

करेंगे वो जिस की उन्हें नसीहत की जा रही है तो उन के लिए बेहतर होगा और ज़्यादा साबित क़दम

تَثْبِيْتًا ﴿٦٦﴾ ۙ وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٦٧﴾ ۙ

रखने वाला होगा। और तब तो हम उन्हें अपनी तरफ से अज्रे अज़ीम देंगे।

وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٦٨﴾ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ

और हम उन्हें सिराते मुस्तक़ीम की रहनुमाई करेंगे। और जो अल्लाह और रसूल की

وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ इताअत करेगा तो ये लोग उन के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इन्आम फरमाया
مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ अम्बिया, और सिद्दीक़ीन, और शुहदा और सालिहीन में से।
وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ۝٦٩ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ؕ और रिफाक़त के लिए ये लोग अच्छे हैं। ये अल्लाह की तरफ से फ़ज़्ल है।
وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ۝٧٠ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا और अल्लाह काफी जानने वाला है। ऐ ईमान वालो! अपने बचाव
حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ۝٧١ के हथ्यार ले लो, फिर छोटी छोटी जमाअतें बन कर निकलो या तुम इकट्ठे निकलो।
وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ और यक़ीनन तुम में से कुछ लोग वो हैं जो देर लगाते हैं। फिर अगर तुम्हें मुसीबत पहोंचे तो वो केहते हैं
قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ۝٧٢ के अल्लाह ने मेरे ऊपर इन्आम फरमाया के मैं उन के साथ मौजूद नहीं था।
وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ और अगर तुम्हें अल्लाह का फ़ज़्ल पहोंचे तो वो ज़रूर कहेगा, गोया
لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ तुम्हारे और उस के दरमियान दोस्ती थी ही नहीं, (वो कहेगा के) काश के मैं उन के साथ होता,
فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝٧٣ فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ फिर मैं भी भारी कामयाबी से कामयाब हो जाता। फिर चाहिए के अल्लाह के रास्ते में क़िताल करें
الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ؕ وَمَنْ वो लोग जो आखिरत के मुक़ाबले में दुन्यवी ज़िन्दगी को बेच देते हैं। और जो भी
يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ अल्लाह के रास्ते में क़िताल करे, फिर वो क़त्ल हो जाए या ग़ालिब आए तो हम
نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝٧٤ وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ अनक़रीब उसे भारी अज्र देंगे। और तुम्हें क्या हुवा के तुम अल्लाह के रास्ते में क़िताल

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ
नहीं करते हालांके मर्द और औरतें और बच्चे जिन्हें कमज़ोर कर के

وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ
रखा गया है जो केहते हैं के ए हमारे रब! हमें इस बस्ती से निकाल जिस के बसने

الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ
वाले ज़ालिम हैं। और हमारे लिए अपनी तरफ से हिमायती मुतअय्यन

وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ۝۷۵
फरमा। और हमारे लिए अपनी तरफ से नुसरत करने वाला मुतअय्यन फरमा।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ
वो लोग जो ईमान लाए वो अल्लाह के रास्ते में क़िताल करते हैं। और जो

كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا
काफिर हैं वो शैतान के रास्ते में क़िताल करते हैं, तो तुम शैतान के

اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ۝۷۶ ع ۱۰ ۷
दोस्तों से क़िताल करो। यक़ीनन शैतान का मक्र कमज़ोर है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ
क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों को जिन से कहा गया था के तुम अपने हाथ रोके रहो

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ
और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात दो। फिर जब उन पर क़िताल फर्ज़

الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ
किया गया तो अचानक उन में से एक जमाअत इन्सानों से डरने लगी अल्लाह से डरने की

اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ
तरह या उस से भी ज़्यादा। और वो केहते हैं के ऐ हमारे रब! तू ने हम पर क़िताल

عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ؕ قُلْ
क्यूं फर्ज़ किया? तू ने हमें क़रीबी मुद्दत तक (जीने की) क्यूं मोहलत नहीं दी? आप फरमा दीजिए के

مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۣ
दुन्या का फाइदा थोड़ा है। और आखिरत बेहतर है उस शख्स के लिए जो मुत्तक़ी है।

وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿۷۷﴾ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ
और तुम पर एक तागे के बराबर भी जुल्म नहीं किया जाएगा। तुम जहां कहीं भी होगे तो मौत तुम्हें
الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ
पकड़ लेगी अगर्चे तुम ऊँचे ऊँचे क़िल्ओं में हो। और अगर उन्हें कोई
حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ
भलाई पहोंचती है तो केहते हैं के ये अल्लाह की तरफ से है। और अगर उन्हें कोई मुसीबत
سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ كُلٌّ مِّنْ
पहोंचती है तो केहते हैं के ये आप की तरफ से है। आप फरमा दीजिए के सब कुछ
عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ
अल्लाह की तरफ से है। फिर इस क़ौम को क्या हुवा के वो बात समझने के क़रीब भी नहीं
حَدِيْثًا ﴿۷۸﴾ مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۫
होते। (ऐ मुखातब!) तुझे जो भलाई पहोंचे वो अल्लाह की तरफ से है।
وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ وَاَرْسَلْنٰكَ
और तुझे जो मुसीबत पहोंचे वो तेरी अपनी तरफ से है। और हम ने आप को
لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿۷۹﴾ مَنْ يُّطِعِ
तमाम इन्सानों के लिए रसूल बना कर भेजा है। और अल्लाह काफी गवाह है। जो रसूल की इताअत
الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ
करेगा तो यक़ीनन उस ने अल्लाह की इताअत की। और जो मुंह मोड़ेगा तो फिर हम ने आप को उन पर निगरां बना कर
عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ﴿۸۰﴾ وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۫ فَاِذَا بَرَزُوْا
नहीं भेजा। और ये केहते हैं के हमारा काम तो खुशी से बात को मानना है। लेकिन जब वो आप के पास से बाहर निकलते
مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ
हैं तो उन में से एक जमाअत रात को चुपके चुपके बातें करती है उस के अलावा जो वो पेहले केह रही थी। और अल्लाह लिख
يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ
रहे हैं उस को जो वो रात को चुपके चुपके बातें करते हैं। फिर आप उन से ऐराज़ कीजिए और अल्लाह पर तवक्कुल
عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۸۱﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ
कीजिए। और अल्लाह काफी कारसाज़ है। क्या फिर वो कुरआन में तदब्बुर

الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ नहीं करते? और अगर ये (कुरआन) अल्लाह के अलावा की तरफ से होता तो वो ज़रूर उस में
اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ۝ ٨٢ وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ बहोत सा इखतिलाफ पाते। और जब अमन या खौफ की कोई बात
اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ आती है, तो वो उस को फैला देते हैं। और अगर वो उस को पेश करते रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तरफ
وَاِلٰٓى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ और सहाबा में से उलुल अम्र की तरफ तो ज़रूर उस को जानते वो लोग जो उन में से उस से इस्तिम्बात कर
مِنْهُمْ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ सकते हैं। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की मेहरबानी न होती तो तुम भी शैतान के
الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ ٨٣ فَقَاتِلْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ पीछे पड़ जाते मगर थोड़े। इस लिए आप अल्लाह के रास्ते में क़िताल कीजिए।
لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ आप को मुकल्लफ नहीं बनाया जाता मगर आप की ज़ात का और आप ईमान वालों को उभारिए। हो सकता है के अल्लाह
اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ काफिरों के ज़ोर को रोक दे। और अल्लाह ज़्यादा सख्त लड़ाई वाला और ज़्यादा सख्त इबरत
تَنْكِيْلًا ۝ ٨٤ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ दिलाने वाला है। जो नेक काम में सिफारिश करे तो उस के लिए उस
نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ में से हिस्सा होगा। और जो बुरे काम की सिफारिश करे तो उस के लिए
لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ مُّقِيْتًا ۝ ٨٥ उस में से हिस्सा होगा। और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है।
وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ और जब तुम्हें सलाम किया जाए तो तुम उस से बेहतर सलाम के साथ जवाब दो या उसी को दोहरा दो।
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ حَسِيْبًا ۝ ٨٦ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद

النصف

اِلَّا هُوَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ
नहीं। वो तुम्हें ज़रूर जमा करेगा क़यामत के दिन में जिस में कोई शक नहीं।
ع ١١ ١١ ٨ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ۟﴿۸۷﴾ فَمَا لَكُمْ
और अल्लाह से ज़्यादा सच्ची बात किस की हो सकती है? फिर तुम्हें क्या हुवा के
فِى الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ
मुनाफिक़ीन के बारे में दो जमाअतें बन रहे हो, हालांके अल्लाह ने उन के आमाल की वजह से उन को औंधा कर दिया है।
اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ
क्या ये चाहते हो के तुम उन को हिदायत दो जिन को अल्लाह ने गुमराह किया? और जिस को अल्लाह
اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۸۸﴾ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ
गुमराह कर दे तो आप उस के लिए कोई रास्ता हरगिज़ नहीं पाओगे। वो चाहते हैं के काश के तुम भी काफिर बन जाओ
كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ
जैसा के वो काफिर बन गए हैं के फिर तुम और वो बराबर हो जाओ, तो तुम उन में से किसी को दोस्त
اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا
मत बनाओ जब तक के वो अल्लाह के रास्ते में हिजरत न करें। फिर अगर वो ऐराज़ करें
فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۠
तो तुम उन को पकड़ो और उन को क़त्ल करो जहाँ तुम उन को पाओ।
وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۸۹﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ
और तुम उन में से किसी को मददगार और दोस्त मत बनाओ। मगर वो लोग जो
يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍ ۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ
ऐसी क़ौम से तअल्लुक़ रखते हैं के तुम्हारे और उन के दरमियान में मुआहदा है या वो तुम्हारे पास आएं
حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا
इस हाल में के उन के सीने तंग हैं इस से के वो तुम से क़िताल करें या अपनी क़ौम से
قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ
क़िताल करें। और अगर अल्लाह चाहता तो उन को तुम पर मुसल्लत करता, फिर वो तुम से क़िताल करते।
فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ
फिर अगर ये लोग तुम से अलग रहें, फिर तुम से क़िताल न करें और तुम्हारी तरफ सुल्ह को

السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿٩٠﴾
डालें, तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए उन पर कोई रास्ता नहीं बनाया।
سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ
अनक़रीब तुम दूसरों को पाओगे जो चाहते हैं के वो तुम से अमन में रहें
وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْٓا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا
और अपनी क़ौम से भी अमन में रहें। जब कभी वो फितने के लिए बुलाए जाते हैं तो उस में औंधे
فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْٓا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ
गिरते हैं। फिर अगर वो तुम से अलग न रहें और तुम्हारी तरफ सुल्ह को न डालें
وَيَكُفُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ
और अपने हाथ न रोकें तो उन को पकड़ो और उन को क़त्ल करो जहाँ
ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا
उन को पाओ। और यही हैं के उन पर हम ने तुम्हारे लिए वाज़ेह दलील मुक़र्रर
مُّبِيْنًا ﴿٩١﴾ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا ع ١٢ ٩
कर दी है। और किसी मोमिन के लिए जाइज़ नहीं है के किसी मोमिन को क़त्ल करे मगर ग़लती
اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ
से। और जो किसी मोमिन को ग़लती से भी क़त्ल करेगा तो उसे एक मोमिन गर्दन (गुलाम या बांदी) को आज़ाद
مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ
करना है और दियत है जो सुपुर्द की जाएगी मक़तूल के वुरसा को मगर
اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ؕ فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ
ये के वो मुआफ कर दें। फिर अगर वो मक़तूल तुम्हारे दुशमन की क़ौम में से हो और वो
مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَاِنْ كَانَ
मोमिन भी हो तो फिर एक मोमिन गर्दन को आज़ाद करना है। और अगर वो
مِنْ قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ
ऐसी क़ौम में से हो के तुम्हारे और उन के दरमियान में मुआहदा हो तो दियत है
مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ
जो सुपुर्द की जाएगी मक़तूल के वुरसा को और एक मोमिन गर्दन को आज़ाद करना है।

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۡ تَوْبَةً
फिर जो उस को न पाए तो दो महीने के लगातार रोज़े रखने हैं। अल्लाह की तरफ से

مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۹۲﴾ وَمَنْ
तौबा के तौर पर। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और जो

يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا
किसी मोमिन को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस की सज़ा जहन्नम है, जिस में वो हमेशा

فِيْهَا وَ غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَ اَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا
रहेगा और अल्लाह का उस पर गज़ब है और उस पर लानत है और अल्लाह ने उस के लिए भारी अज़ाब

عَظِيْمًا ﴿۹۳﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ
तय्यार कर रखा है। ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह के रास्ते में

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى
सफर करो तो अच्छी तरह तहक़ीक़ कर लो और उस शख्स के मुतअल्लिक़ जो तुम्हें सलाम करे

اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ
उस को यूं मत कहो के तू मोमिन नहीं है। क्या तुम दुन्यवी ज़िन्दगी का

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ؕ كَذٰلِكَ
सामान चाहते हो? फिर अल्लाह के पास बहोत सी ग़नीमतें हैं। इसी तरह

كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ؕ
इस से पेहले तुम भी थे, फिर अल्लाह ने तुम पर एहसान फरमाया तो अच्छी तरह तहक़ीक़ कर लिया करो।

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۹۴﴾ لَا يَسْتَوِى
यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर हैं। ईमान वालों में से

الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِى الضَّرَرِ
जिहाद से बैठने वाले जो माज़ूरीन के अलावा हों,

وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ
वो और अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और जानों के ज़रिए जिहाद करने वाले दोनों बराबर नहीं हो सकते।

فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ
अल्लाह ने अपने मालों और जानों के ज़रिए जिहाद करने वालों को फज़ीलत दी है

عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ
जिहाद से बैठने वालों पर एक दरजे के ऐतेबार से। ओर हर एक से अल्लाह ने अच्छे बदले का

الْحُسْنٰى ؕ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ
वादा किया है। और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को जिहाद से बैठने वालों पर फज़ीलत दी है

اَجْرًا عَظِيْمًا ۙ﴿۹۵﴾ دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ
भारी अज्र से। जो अल्लाह की तरफ से दरजात होंगे और मग़फिरत और रहमत होगी।

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۹۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ ع ۱۴ ۱۳
और अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। यक़ीनन वो लोग जो अपनी जानों पर

الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ
जुल्म करने वाले हैं, उन की फरिश्ते जान निकालते हैं तो फरिश्ते पूछते हैं के तुम किस जगह में थे?

قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا
तो वो केहते हैं के हम उस मुल्क में कमज़ोर कर के रखे गए थे। तो वो केहते हैं के

اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ
क्या अल्लाह की ज़मीन वसीअ नहीं थी के तुम उस में हिजरत कर जाते?

فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۙ﴿۹۷﴾
फिर उन का ठिकाना जहन्नम है। और वो बुरी जगह है।

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ
मगर वो जो कमज़ोर कर के रखे गए हों मर्दों और औरतों

وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ
और बच्चों में से, जो किसी हीले की ताक़त नहीं रखते और वो न कोई रास्ता

سَبِيْلًا ۙ﴿۹۸﴾ فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ
जानते हैं। तो उम्मीद है के अल्लाह उन्हें मुआफ कर दें।

وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿۹۹﴾ وَمَنْ يُّهَاجِرْ
और अल्लाह बहोत ज़्यादा मुआफ करने वाले, बहोत ज़्यादा बख्शने वाले हैं। और जो हिजरत करेगा

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِى الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا
अल्लाह के रास्ते में तो वो ज़मीन में बहोत सी कशाइश

وَّسَعَةً ؕ وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا
और वुस्अत पाएगा। और जो अपने घर से निकले मुहाजिर बन कर
اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ
अल्लाह और उस के रसूल की तरफ, फिर उस को मौत पा ले तो उस
ع اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝۱۰۰
का अज्र अल्लाह के ज़िम्मे वाजिब हो गया। और अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।
وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ
और जब तुम ज़मीन में सफर करो, फिर तुम पर कोई गुनाह नहीं है
اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ
के नमाज़ को क़स्र पढ़ो, अगर तुम्हें डर हो के काफिर
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا
तुम्हें सताएंगे। यक़ीनन काफिर लोग तुम्हारे खुले दुशमन
مُّبِيْنًا ۝۱۰۱ وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ
हैं। और जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उन में हों, फिर आप उन के लिए नमाज़ क़ाइम करें
فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَاْخُذُوْۤا اَسْلِحَتَهُمْ ۚ قف
तो चाहिए के उन में से एक जमाअत आप के साथ खड़ी हो जाए और उन्हें चाहिए के वो अपना अस्लहा लिए रहें।
فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآئِكُمْ ۪ وَلْتَاْتِ
फिर जब वो सजदा करें तो वो तुम्हारे पीछे हो जाएं, और दूसरी
طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ
जमाअत आ जाए जिस ने नमाज़ नहीं पढ़ी, फिर चाहिए के वो आप के साथ नमाज़ पढ़ें
وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِيْنَ
और वो भी अपनी हिफाज़त का सामान और अपना अस्लहा लिए रहें। काफिर लोग चाहते हैं
كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ
के काश के तुम अपने अस्लहे और अपने सामान से ग़ाफिल हो जाओ,
فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ
फिर वो अचानक तुम्हारे ऊपर हमला कर दें। और अगर तुम्हें बारिश की

عَلَيۡكُمۡ اِنۡ كَانَ بِكُمۡ اَذًى مِّنۡ مَّطَرٍ اَوۡ كُنۡتُمۡ
वजह से तकलीफ हो या तुम बीमार हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है

مَّرۡضٰۤى اَنۡ تَضَعُوۡۤا اَسۡلِحَتَكُمۡ ۚ وَخُذُوۡا حِذۡرَكُمۡ ؕ
इस में के अपने हथयार रख दो। और अपने बचाव के सामान को लिए रहो।

اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلۡكٰفِرِيۡنَ عَذَابًا مُّهِيۡنًا ﴿١٠٢﴾
यक़ीनन अल्लाह ने काफिरों के लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है।

فَاِذَا قَضَيۡتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذۡكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوۡدًا
फिर जब नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे

وَّعَلٰى جُنُوۡبِكُمۡ ۚ فَاِذَا اطۡمَاۡنَنۡتُمۡ فَاَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ ۚ
और अपने पेहलू पर लेट कर। फिर जब तुम मुतमइन हो तो नमाज़ क़ाइम करो।

اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتۡ عَلَى الۡمُؤۡمِنِيۡنَ كِتٰبًا مَّوۡقُوۡتًا ﴿١٠٣﴾
यक़ीनन नमाज़ ईमान वालों पर मुक़र्ररा औक़ात में फर्ज़ की गई है।

وَلَا تَهِنُوۡا فِى ابۡتِغَآءِ الۡقَوۡمِ ؕ اِنۡ تَكُوۡنُوۡا تَاۡلَمُوۡنَ
और उस क़ौम का पीछा करने में हिम्मत न हारो। अगर तुम्हें अलम (तकलीफ) पहोंचा है

فَاِنَّهُمۡ يَاۡلَمُوۡنَ كَمَا تَاۡلَمُوۡنَ ۚ وَتَرۡجُوۡنَ مِنَ اللّٰهِ
तो उन्हें भी अलम पहोंचा है जैसा के तुम्हें अलम पहोंचा है। और तुम अल्लाह से उम्मीद रखते हो

مَا لَا يَرۡجُوۡنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيۡمًا حَكِيۡمًا ﴿١٠٤﴾ ع ع ١٥ ١٢
उन चीज़ों की जो वो उम्मीद नहीं रखते। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं।

اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ الۡكِتٰبَ بِالۡحَقِّ لِتَحۡكُمَ بَيۡنَ النَّاسِ
यक़ीनन हम ने आप की तरफ ये किताब उतारी हक़ के साथ ताके आप फैसला करें इन्सानों के दरमियान

بِمَاۤ اَرٰٮكَ اللّٰهُ ؕ وَلَا تَكُنۡ لِّلۡخَآٮِٕنِيۡنَ خَصِيۡمًا ﴿١٠٥﴾ ۙ
उस के मुताबिक़ जो अल्लाह आप को दिखाए। और आप खयानत करने वालों की तरफ से झगड़ा करने वाले न बनें।

وَّاسۡتَغۡفِرِ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوۡرًا رَّحِيۡمًا ﴿١٠٦﴾ ۚ
और आप अल्लाह से इस्तिग़फार कीजिए। यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

وَلَا تُجَادِلۡ عَنِ الَّذِيۡنَ يَخۡتَانُوۡنَ اَنۡفُسَهُمۡ ؕ اِنَّ
और आप उन की तरफ से न झगड़ें जो अपनी जानों से खयानत करते हैं। यक़ीनन

اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ﴿١٠٧﴾ يَّسْتَخْفُوْنَ

अल्लाह उस शख्स से महब्बत नहीं रखता जो खयानत करने वाला, गुनहगार है। वो लोगों

مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ

से छुपना चाहते हैं और अल्लाह से छुप नहीं सकते इस हाल में के वो उन के साथ होता है

اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ؕ وَكَانَ

जब वो रात के वक्त सरगोशी कर रहे होते हैं ऐसी बातों की जो अल्लाह को पसन्द नहीं हैं। और

اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ﴿١٠٨﴾ هٰاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ

अल्लाह उन के आमाल का इहाता किए हुए है। सुनो! तुम तो वो लोग हो के तुम ने

عَنْهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا قف فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ

उन की तरफ से दुन्यवी ज़िन्दगी में झगड़ा कर लिया। फिर कौन अल्लाह से झगड़ेगा

عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿١٠٩﴾

उन की तरफ से क़यामत के दिन या कौन उन का वकील बनेगा?

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ

और जो कोई बुरा काम कर ले या अपनी जान पर ज़ुल्म कर ले, फिर वो अल्लाह से इसतिग़फार

اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١١٠﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ

कर ले तो वो अल्लाह को बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला पाएगा। और जो

اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ

गुनाह कमाता है तो वो सिर्फ अपनी जान ही के खिलाफ गुनाह कमा रहा है। और अल्लाह

عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓـَٔةً اَوْ اِثْمًا

इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और जो कोई ग़लती कर ले या कोई गुनाह कर ले,

١٦ ع ٨ ١٣ ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿١١٢﴾

फिर उस के ज़रिए किसी बेगुनाह को मुत्तहम करे, तो यक़ीनन उस ने बोहतान और खुले गुनाह का बोझ उठाया।

وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ

और अगर आप पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की मेहरबानी न होती तो उन में

طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ

से एक जमाअत ने इरादा कर लिया था इस बात का के वो आप को गुमराह कर दें। और वो गुमराह नहीं करते मगर

اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ۭ وَ اَنْزَلَ اللّٰهُ
अपने आप को और वो आप को ज़रा भी ज़रर नहीं पहोंचा सकते। और अल्लाह ने आप पर
عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ عَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ
किताब और हिक्मत उतारी और आप को इल्म दिया ऐसी चीज़ों का जो आप जानते
تَعْلَمُ ۭ وَ كَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٣﴾ لَا خَيْرَ
नहीं थे। और अल्लाह का फ़ज़्ल आप पर बहोत ज़्यादा है। उन की
فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ
सरगोशियों में से बहोत सी सरगोशी में कोई भलाई नहीं, मगर वो शख्स जो सदक़े का हुक्म करे
اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۢ بَيْنَ النَّاسِ ۭ وَمَنْ يَّفْعَلْ
या नेकी का हुक्म दे या इन्सानों के दरमियान सुल्ह का हुक्म दे। और जो ऐसा
ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا
करेगा अल्लाह की रज़ा तलब करने के लिए तो अनक़रीब हम उसे भारी अज्र
عَظِيْمًا ﴿١١٤﴾ وَ مَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ
देंगे। और जो रसूल की मुखालफत करेगा इस के बाद के
مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَ يَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ
उस के लिए हिदायत वाज़ेह हो गई और वो ईमान वालों के रास्ते के अलावा पर चलेगा,
نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَ نُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ۭ وَ سَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٥﴾
तो हम उस के लिए महबूब बना देंगे जिसे उस ने पसन्द किया है और हम उसे जहन्नम में दाखिल करेंगे। और वो बुरी जगह है।
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَ يَغْفِرُ مَا دُوْنَ
यक़ीनन अल्लाह मग़फिरत नहीं करेंगे इस की के उस के साथ किसी को शरीक ठेहराया जाए और वो उस के अलावा की
ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۭ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ
मग़फिरत कर देंगे जिस के लिए वो चाहेंगे। और जो अल्लाह के साथ शरीक ठेहराए, तो यक़ीनन वो दूर की
ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿١١٦﴾ اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اِنٰثًا ۚ
गुमराही में गुमराह हो गया। वो अल्लाह को छोड़ कर इबादत नहीं करते मगर मुअन्नस की।
وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿١١٧﴾ لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ
और वो नहीं पुकारते मगर सरकश शैतान को। जिस पर अल्लाह ने लानत की है।

الثلثة

ع ١٧

وقف لازم

وَّ قَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۙ﴿١١٨﴾
और जिस ने कहा है के मैं तेरे बन्दों में से एक मुकर्रर किया हुवा हिस्सा ज़रूर बनाऊँगा।
وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ
और मैं उन्हें गुमराह किया करूंगा और मैं उन्हें तमन्नाएं दिलाऊँगा और मैं उन्हें हुक्म करूंगा, फिर वो चौपाओं
اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ
के कान चीरेंगे और मैं उन्हें हुक्म दूंगा फिर वो अल्लाह के बनाए हुए जिस्म को बदलेंगे।
وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ
और जो शैतान को दोस्त बनाएगा अल्लाह को छोड़ कर के तो
خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿١١٩﴾ يَعِدُهُمْ وَ يُمَنِّيْهِمْ ؕ
उस ने खुला खसारा उठाया। शैतान उन्हें वादा दिलाता है और उन्हें तमन्नाएं दिलाता है।
وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢٠﴾ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ
और शैतान उन से वादा नहीं करता मगर धोके का। यही हैं जिन का ठिकाना
جَهَنَّمُ ز وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ﴿١٢١﴾ وَالَّذِيْنَ
जहन्नम है। और वो उस से भागने की कोई जगह नहीं पाएंगे। और जो लोग
اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, तो अनक़रीब हम उन्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल करेंगे जिन के
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ
नीचे से नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। अल्लाह की तरफ से सच्चे
حَقًّا ؕ وَ مَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿١٢٢﴾ لَيْسَ
वादे के तौर पर। और अल्लाह से ज़्यादा सच्ची बात किस की हो सकती है? न तुम्हारी
بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ
तमन्नाओं पर मदार है और न एहले किताब की तमन्नाओं पर मदार है। जो कोई बुरा काम
سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا
करेगा तो उस की सज़ा पाएगा और वो अपने लिए अल्लाह के अलावा कोई मददगार और कोई कारसाज़
وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾ وَ مَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ
नहीं पाएगा। और जो नेक आमाल करेगा, वो मर्दों में से हो

اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ

या औरतों में से हो, बशर्तेके वो मोमिन हो तो वही लोग जन्नत में दाखिल होंगे

وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٤﴾ وَ مَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ

और उन पर खजूर की गुठली के सूराख के बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। और उस शख्स से बेहतर दीन किस का हो सकता

اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ

है जिस ने अपना चेहरा अल्लाह के ताबेअ कर दिया और वो नेकी करने वाला है और जो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की

اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿١٢٥﴾

मिल्लत पर चला जो एक अल्लाह ही के हो कर रेहने वाले थे। और अल्लाह ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को खलील बनाया था।

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَ كَانَ

और अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं ओर जो ज़मीन में हैं। और अल्लाह

اللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ مُّحِيْطًا ﴿١٢٦﴾ وَ يَسْتَفْتُوْنَكَ ع ١٨ ١٥

हर चीज़ का इहाता किए हुए है। और ये आप से सवाल करते हैं

فِى النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ

औरतों के बारे में। आप फरमा दीजिए के अल्लाह तुम्हें इजाज़त देते हैं उन औरतों के बारे में।

فِى الْكِتٰبِ فِىْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِىْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ

और वो जो तुम को सुनाया जाता है कुरआन में यतीम लड़कियों के बारे में जिन को तुम नहीं देते

مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَ تَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ

वो जो उन के लिए मुकर्रर किया गया है और तुम ऐराज़ करते हो इस से के तुम उन से निकाह करो

وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى

और कमज़ोर बच्चों के मुतअल्लिक़ और इस बात का के तुम यतीमों के लिए इन्साफ को ले कर खड़े

بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ

हो जाओ। और जो भलाई भी तुम करोगे तो यक़ीनन अल्लाह उसे

بِهٖ عَلِيْمًا ﴿١٢٧﴾ وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا

खूब जानते हैं। और अगर किसी औरत को अन्देशा हो अपने शौहर की तरफ से

نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا

हक़तल्फी या बेऐतेनाई का तो उन दोनों पर कोई गुनाह नहीं है के वो आपस

بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ

में सुल्ह कर लें। और सुल्ह बेहतर है। और बुख़्ल सब ही तबायेअ में

الشُّحَّ ؕ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ

रखा गया है। और अगर तुम नेकी करोगे और मुत्तक़ी बनोगे तो यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٢٨﴾ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ

से बाखबर है। और तुम इस की ताक़त हरगिज़ नहीं रखते के इन्साफ करो

النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا

बीवियों के दरमियान अगर्चे तुम कितनी हिर्स करो, इस लिए पूरे तौर पर एक तरफ माइल न हो जाओ के तुम उसे

كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

अध्धर लटकी हुई की तरह छोड़ दो। और अगर तुम इस्लाह करो और मुत्तक़ी बनो तो यक़ीनन अल्लाह

كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٢٩﴾ وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا

बहोत ज़्यादा बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और अगर वो दोनों अलग हो जाएंगे तो अल्लाह अपनी वुस्अत

مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿١٣٠﴾ وَلِلّٰهِ

से सब को ग़नी कर देंगे। और अल्लाह वुस्अत वाले, हिक्मत वाले हैं। और अल्लाह की मिल्क हैं

مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ

वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और यक़ीनन हम ने ताकीदी हुक्म दिया उन को

اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ

जिन्हें किताब दी गई तुम से पेहले और तुम्हें भी ये के अल्लाह से डरो।

وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ

और अगर तुम कुफ्र करोगे तो यक़ीनन अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿١٣١﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

और अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। और अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं

وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٣٢﴾ اِنْ يَّشَاْ

और जो ज़मीन में हैं। और अल्लाह काफी कारसाज़ है। अगर अल्लाह चाहे

يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ وَكَانَ

तो तुम्हें हलाक कर दे ऐ इन्सानो! और दूसरों को ले आए। और अल्लाह

اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿۱۳۳﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ
इस पर कुदरत वाला है। जो दुन्या का सवाब चाहेगा
الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ
तो अल्लाह के पास दुन्या और आखिरत का सवाब है। और अल्लाह
اللّٰهُ سَمِيْعًا ۢ بَصِيْرًا ﴿۱۳۴﴾ؑ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا
सुनने वाले, देखने वाले हैं। ऐ ईमान वालो! इन्साफ को ले कर
قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ
खड़े होने वाले बन जाओ, अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बन जाओ, अगर्चे अपनी जानों के खिलाफ
اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا
वो गवाही क्यूं न हो या वालिदैन और रिश्तेदारों के खिलाफ क्यूं न हो। अगर वो मालदार या फकीर है
فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰۤى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ
तो अल्लाह उन से ज़्यादा महब्बत वाला है। तो ख्वाहिशात के पीछे मत पड़ो के तुम इन्साफ न करो।
وَاِنْ تَلْوٗۤا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
और अगर तुम मुंह मोड़ोगे या ऐराज़ करोगे तो यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल से
خَبِيْرًا ﴿۱۳۵﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ
बाखबर है। ऐ ईमान वालो! ईमान लाओ अल्लाह पर
وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ
और उस के रसूल पर और उस किताब पर जो उस ने उतारी अपने रसूल पर और उन किताबों पर
الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
जो इस से पेहले उस ने उतारी हैं। और जो कुफ्र करेगा अल्लाह के साथ और उस के फरिश्तों
وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ
और उस की किताबों और उस के पैगम्बरों और आखिरी दिन के साथ तो यक़ीनन वो दूर की गुमराही में गुमराह
بَعِيْدًا ﴿۱۳۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا
हो गया। यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए, फिर काफिर हो गए, फिर ईमान लाए,
ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ
फिर काफिर हो गए, फिर कुफ्र में वो बढ़ते रहे, तो अल्लाह ऐसा नहीं है के उन की मग़फिरत करे

ع ۱۹ ۸ ۱۲

وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ؕ﴿۱۳۷﴾ بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ
और अल्लाह ऐसा नहीं है के उन को रास्ते की हिदायत दे। मुनाफिक़ों को बशारत सुना दीजिए इस बात की के उन के लिए

عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ﴿۱۳۸﴾ الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ
दर्दनाक अज़ाब है। उन को जो काफिरों को दोस्त बनाते हैं

مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ
ईमान वालों को छोड़ कर। क्या वो उन के पास इज़्ज़त चाहते हैं?

فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ﴿۱۳۹﴾ وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ
तो यक़ीनन सारी की सारी इज़्ज़त अल्लाह ही की है। यक़ीनन उस ने तुम पर किताब में ये बात

فِي الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا
उतारी है के जब तुम अल्लाह की आयतों को सुनो के उन के साथ कुफ्र किया जा रहा है

وَ يُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا
और उन का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है तो तुम उन के साथ मत बैठो यहां तक के वो उस के अलावा किसी

فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖۤ ۖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ
दूसरी बात में लग जाएं। यक़ीनन तब तो तुम उन्ही जैसे हो जाओगे। यक़ीनन अल्लाह मुनाफिक़ों

الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعَا ۙ﴿۱۴۰﴾ الَّذِيْنَ
और काफिरों को जहन्नम में सब को इकट्ठा करने वाला है। उन को जो

يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْۤا
तुम्हारे मुतअल्लिक़ मुन्तज़िर रेहते हैं, फिर अगर अल्लाह की तरफ से तुम्हारे लिए फतह हो तो वो केहते हैं

اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْۤا
के क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे? और अगर काफिरों का हिस्सा हो तो केहते हैं

اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَ نَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ فَاللّٰهُ
क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं आ गए थे और मुसलमानों से बचाया नहीं था? फिर अल्लाह

يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ
तुम्हारे दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा। और अल्लाह ने काफिरों के लिए

ع ۲۰ ۱۷ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ۧ﴿۱۴۱﴾ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ
ईमान वालों पर रास्ता हरगिज़ नहीं बनाया। यक़ीनन मुनाफिक़ लोग वो अल्लाह को धोका

اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا

दे रहे हैं और अल्लाह भी उन के खिलाफ तदबीर कर रहा है। और जब वो नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो

كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ

सुस्ती से खड़े होते हैं। वो लोगों से दिखलावा करते हैं और वो अल्लाह को याद नहीं करते

اِلَّا قَلِيْلًا ١٤٢ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ

मगर थोड़ा। वो उस के दरमियान तज़बजुब में हैं, न इन की तरफ

وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ

और न उन की तरफ। और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे तो आप उस के लिए कोई रास्ता

سَبِيْلًا ١٤٣ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا

हरगिज़ नहीं पाओगे। ऐ ईमान वालो! तुम काफिरों को

الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ اَتُرِيْدُوْنَ

दोस्त मत बनाओ ईमान वालों को छोड़ कर। क्या तुम ये चाहते हो के

اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ١٤٤

अल्लाह के लिए अपने खिलाफ वाज़ह दलील मुक़र्रर कर दो?

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ

यक़ीनन मुनाफिक़ लोग जहन्नम के सब से निचले वाले तबक़े में होंगे।

وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ١٤٥ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا

और आप उन के लिए कोई मददगार हरगिज़ नहीं पाओगे। मगर वो लोग जिन्हों ने तौबा की और इस्लाह की

وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ

और अल्लाह की रस्सी को मज़बूत पकड़ा और अपने दीन को अल्लाह के लिए खालिस किया तो ये लोग

مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ

ईमान वालों के साथ होंगे। और अनक़रीब अल्लाह ईमान वालों को

اَجْرًا عَظِيْمًا ١٤٦ مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ

भारी सवाब देगा। अल्लाह तुम्हें अज़ाब दे कर क्या करेगा

اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ١٤٧

अगर तुम शुक्र अदा करो और ईमान लाओ। और अल्लाह कदरदाँ है, इल्म वाला है।